

DR. VIKRAM CHANDRA THAKUR

Dr. Vikram Chandra Thakur is the former Director of the Wadia Institute of Himalayan Geology at Dehradun, Uttarakhand. He has devoted 45 years of research work on the regional geology and tectonics of the Northwest Himalaya and active tectonics of the frontal Sub Himalayan zone. Dr. Thakur, as Director, has contributed significantly for growth of the institute in terms of building analytical laboratory facilities and developing thrust areas of research in Himalayan tectonics, seismicity and glaciology.

2. Dr. Thakur was born on January 15, 1940 at Dharamsala, Himachal Pradesh. He did his M.Sc. in 1962 from Punjab University, Chandigarh, and Ph.D. in 1971 from Imperial College of Science and Technology, London University, U.K. He joined the Wadia Institute of Himalayan Geology as a Scientist in 1972, and later years selected as the Director in 1988. He served two terms as Director of the institute. After superannuation, he continued his research as CSIR-Emeritus scientist during 2000 to 2005, Principal Investigator in two DST projects, 2005 to 2013, and Co - Principal Investigator in MOES project, 2014 to 2017.

3. Dr. Thakur has published 120 research papers in both national and international journals with high impact factor. He has authored a book on the Geology of Western Himalaya, Pergamon Press, and the second co — author of a book on Active faults of Uttarakhand, Springer in press. With his team of research students working in the Chamba, Kishatwar and Doda regions in NW Himalaya, he revealed the structural and tectonic framework. He with his fellow scientists geologically mapped the remote areas in Nubra, Shyok, Indus and Karakoram and carried out multidisciplinary studies, leading to publish a monograph. Post — superannuation, he has contributed significantly in active tectonics including paleoseismology and active faults of the Sub Himalayan zone. He has served as a member of the editorial boards of the journal of the Geological Society of America and Transactions of Royal Society of Edinburgh. In recognition of his work, he has been a member of several international committees of the International lithosphere Programme. He has been an invited scientist to deliver lectures in several universities of Japan, USA, USSR Academy of Sciences, Royal Society London, CNNRS France, Germany and Holland.

4. As a Director, Dr. Thakur organized and developed field laboratories / stations in the Himalayan region. A seismological network of stations was established in Kangra — Chamba region of Himachal Pradesh to record and monitor seismicity. A permanent field station was set up at the base of Dhokriani Bamak glacier in Garhwal to monitor the advance and retreat of the glacier. The 10 years data generated on glaciology brought international recognition for climate change programme. The Natural Resources Data Management System centre was established at Pauri Garhwal that provided technical support for ongoing development projects in the state.Dr, Thakur is a Fellow of the Indian Academy of Sciences, Bangalore, elected in 1991. He is a recipient of the National Mineral Award of Government of India, Ministry of Steel and Mines (1983 — 1984).



डॉ. विक्रम चन्द्र ठाकुर

डॉ. विक्रम चन्द्र ठाकुर देहरादून, उत्तराखंड स्थित वाडिया इंस्टीट्यूट ऑव हिमालयन जियोलॉजी के पूर्व निदेशक हैं। आपने क्षेत्रीय भू-विज्ञान एवं उत्तर-पश्चिम हिमालय के वास्तु शिल्प और फ्रंटल सब हिमालयन क्षेत्र के सक्रिय वास्तुशिल्प पर अनुसंधान कार्य में 45 वर्ष समर्पित किए हैं। आपने, निदेशक के रूप में विश्लेषणात्मक प्रयोगशाला सुविधाओं के निर्माण तथा हिमालयी वास्तुशिल्प, भूकंपमिति एवं हिमानीविज्ञान में अनुसंधान के चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों के विकास के संदर्भ में इस संस्थान के विकास के लिए उल्लेखनीय योगदान किया है।

2. आपका जन्म 15 जनवरी, 1940 को धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश में हुआ था। आपने अपनी एम एस सी की उपाधि वर्ष 1962 में पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ से अर्जित की तथा वर्ष 1971 में, इम्पीरियल कॉलेज ऑव साइंस एंड टेक्नॉलोजी, लंदन युनिवर्सिटी, यू.के. से पी एच डी प्राप्त की थी। आपने वर्ष 1972 में, एक वैज्ञानिक के रूप में वाडिया इंस्टीटयूट ऑव हिमालयन जियोलोजी में कार्य ग्रहण किया तथा बाद के वर्षों में, वर्ष 1988 में निदेशक के पद पर चयनित किए गए। आपने इस संस्थान के निदेशक के रूप में दो कार्यकाल के दौरान अपनी सेवाएं दीं। सेवानिवृत्ति के बाद, आपने 2000 से 2005 के दौरान सी एस आई आर एमेरिटस साइंटिस्ट, 2005 से 2013 तक दो डी एस टी परियोजनाओं में प्रिंसिपल इनवेस्टीगेटर तथा 2014 से 2017 तक एम ओ ई एस परियोजना में प्रिंसिपल इनवेस्टीगेटर के रूप में अपना शोध कार्य जारी रखा।

3. आपने हाई इम्पैक्ट फैक्टर के साथ राष्ट्रीय एवं अंतर-राष्ट्रीय, दोनों ही स्तर की पत्रिकाओं में 20 शोध-पत्र प्रकाशित किए हैं। आपने जियोलोजी ऑव वेस्टर्न हिमालय, परगेमन प्रेस पर एक पुस्तक का लेखन और एक्टिव फाल्टस ऑव उत्तराखंड, स्प्रिजंर इन प्रेस पर दूसरी पुस्तक का सह-लेखन किया। उत्तर पश्चिम हिमालय में चंबा, किश्तवार तथा डोडा क्षेत्रों में कार्यरत अपने शोध छात्रों की टीम के साथ आपने संरचनात्मक एवं वास्तुशिल्पी ढांचे का प्रकटन किया। आपने अपने फेलो-साइंटिस्टों के साथ नूब्रा, शायोक, इंडस तथा कराकोरम के दूरस्थ क्षेत्रों का भौगोलिक रूप से मापन किया और बहुविषयक अध्ययन संचालित किए, जिसके परिणामस्वरूप एक मोनोग्राफ प्रकाशित किया गया। सेवानिवृत्ति के उपरांत,आपने पोलियोसीस्मोलोजी तथा उप-हिमालयी जोन के एक्टिव-फाल्टस सहित सक्रिय वास्तुशिल्प में उल्लेखनीय रूप से योगदान किया है। आपने जीयोलोजिकल सोसायटी ऑव अमेरिका एंड ट्रांजैक्शन ऑव रॉयल सोसायटी ऑव एडिनबर्ग जर्नल के संपादकीय मंडल के एक सदस्य के रूप में अपनी सेवाएं दी हैं। आपके इन कार्यों के मान्यता स्वरूप, आप इंटरनेशनल लिथोस्फेयर प्रोग्राम की कई अंतरराष्ट्रीय समितियों के सदस्य रहे हैं। आप जापान, यू एस ए, यू एस एस आर एकेडमी ऑव साइंसेज, रॉयल सोसायटी लंदन, सी एन एन आर एस, जर्मनी तथा हालैंड के कई विश्वविद्यालयों में व्याख्यान देने के लिए एक आमंत्रित साइंटिस्ट रहे हैं।

4. एक निदेशक के रूप में, आपने हिमालयी क्षेत्र में फील्ड प्रयोगशालाओं/स्टेशनों का संगठन एवं विकास किया। भूकंपमिति को रिकार्ड एवं मॉनिटर करने हेतु हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा – चम्बा क्षेत्र में भूकंप विज्ञान स्टेशनों के एक नेटवर्क की स्थापना की। ग्लेशियर के अग्रगमन एवं पश्चगमन को मॉनिटर करने हेतु गढ़वाल में धोक्रियानी बामक ग्लेशियर के बेस में एक स्थायी फील्ड स्टेशन स्थापित किया गया था। हिमानी विज्ञान पर सृजित 10 वर्षों के आंकड़ों को जलवायु परिवर्तन कार्यक्रम के लिए अंतरराष्ट्रीय मान्यता मिली। पौड़ी गढ़वाल में प्राकृतिक संसाधन आंकड़ा प्रबंधन प्रणाली केन्द्र की स्थापना की गई थी जिसने राज्य में चालू विकास परियोजनाओं के लिए तकनीकी सहायता मुहैया करायी। आप द इंडियन एकेडेमी ऑव साइंसेज, बंगलौर के एक फलो हैं और वर्ष 1991 में निर्वाचित हुए थे। आपको भारत सरकार, इस्पात एवं खान मंत्रालय का नेशनल मिनरल अवार्ड (1983-1984) प्राप्त हुआ।